राजस्थान में विश्व का पहला 'ॐ' आकार का मंदिर

चर्चा में क्यों?

राजस्थान के **पाली ज़िले** में पवित्र प्रतीक **'ॐ'** के आकार का एक सुंदर मंदिर वर्तमान में निर्माणाधीन है। **इस प्रतिष्ठित रूप में डिज़ाइन किया गया यह विश्व का पहला मंदिर होगा।**

मुख्य बिंदु:

- **'ॐ आकार' मंदिर** के नाम से मशहूर यह स्मारकीय संरचना पाली ज़िले के जादान गाँव में **नागर शैली** में 250 एकड़ के विशाल विस्तार में फैली हुई है।
- सूत्रों के अनुसार यह महत्त्वपूर्ण कार्य **वर्ष 1995 में मंदिर की आधारशिला रखने** के साथ शुरू हुआ था, जिसके वर्ष 2023-24 तक पूरा होने की उम्मीद जताई गई थी।
    - यह अपने **पवित्र परिसर में भगवान महादेव की 1,008 मूर्तियों** और **12 ज्योतिर्लिंगों को रखने में सक्षम होगा।**
    - 135 फीट की ऊँचाई पर स्थित यह मंदिर **2,000 स्तंभों** के सहारे खड़ा है, इसके परिसर में **108 कमरों** की व्यवस्था की गई है।
    - मंदिर परिसर की केंद्रीय विशेषता **गुरु माधवानंद जी की समाधि** है।
    - मंदिर के सबसे ऊपरी खंड में एक गर्भगृह है जो धौलपुर की बंसी पहाड़ी से प्राप्त स्फटिक से निर्मित शिवलिंग से सुशोभित है।
- इस भव्य परियोजना के पीछे दूरदर्शी ओम आश्रम के संस्थापक **विश्व गुरु महामंडलेश्वर परमहंस स्वामी महेश्वर नंद पुरीजी महाराज** हैं।
- हिंदू धर्म में ॐ मंत्र का अत्यधिक महत्त्व है क्योंकि अनुयायियों द्वारा प्रतिदिन प्रातःकाल इस महामंत्र का जाप किया जाता है।

//

नागर शैली का मंदिर

- उत्तर भारत में यह आम बात है कि पूरा मंदिर एक **पत्थर के चबूतरे पर बनाया जाता है** और ऊपर तक जाने के लिये सीढ़ियाँ होती हैं।
- इसके अलावा, **दक्षिण भारत के विपरीत इसमें सामान्यतः विस्तृत सीमा दीवारें** या प्रवेश द्वार नहीं होते हैं।
- जबकि शुरुआती मंदिरों में सिर्फ एक टावर या शिखर होता था, बाद के मंदिरों में कई टावर या शिखर होते थे।
- गर्भगृह हमेशा सबसे ऊँचे टॉवर के ठीक नीचे स्थित होता है।
- शिखर के आकार के आधार पर नागर मंदिरों के कई उपविभाग हैं।
- भारत के विभिन्न हिस्सों में मंदिर के विभिन्न हिस्सों के अलग-अलग नाम हैं; हालाँकि साधारण शिखर का नाम जो आधार पर वर्गाकार होता है और जिसकी दीवारें शीर्ष पर एक बिंदु तक अंदर की ओर होती हैं, उसे **'लैटिना'** या रेखा-प्रसाद प्रकार का शिकारा कहा जाता है।
- नागरा क्रम में वास्तुशिल्प का दूसरा प्रमुख प्रकार **फमसाना** है, जो लैटिना की तुलना में व्यापक और छोटा होता है।
- उनकी छतें कई स्लैबों से बनी होती हैं जो धीरे-धीरे इमारत के केंद्र पर एक बिंदु तक उठती हैं, लैटिन छतों के विपरीत जो तेज़ी से बढ़ते ऊँचे टावरों की तरह दिखती हैं।
- नागर भवन के तीसरे मुख्य उप-प्रकार को सामान्यतः **वल्लभी प्रकार** कहा जाता है।
- ये आयताकार इमारतें हैं जिनकी छत एक गुंबददार कक्ष में उठी हुई है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/world-s-first-om-shaped-temple-in-rajasthan